सम्पादक की कलम से

अपने बच्चों को भी शिक्षित कर चुनौति दो

कहते है कि एक ऐसी चाबी से सभी और आगे बढ़ने के द्वार खुलते है। यह चाबी है शिक्षा –शिक्षा का आशय रोजगार मूलक शिक्षा जिससे रोजगार श्रजन करने की क्षमता विकसित हो । अशिक्षित व्यक्ति का संसार सीमित ही बना रहता है, किन्तु शिक्षित व्यक्ति संसार भर में कहीं भी अपनी गणवत्ता पूर्ण शिक्षा से अपना और अपने परिवार का जीवन सुखमय बना सकता है। उसे रोजगार तलासने की आवश्यकता नहीं होती बल्कि पढ़ते पढ़ते प्रशिक्षण लेते हुए ही रोजगार मिल जाता है किन्तु जो गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा नहीं ले पाता उसका जीवन आधा ही बना रहता है।

अब प्रश्न यह उठता है कि ऐसे कौन अभिभावक होंगे जो अपनी संतान को शिक्षित–प्रशिक्षित नहीं कराना चाहते है। उत्तर सभी की इच्छा होती है, कि मेरी संतान भी उच्च शिक्षित होकर ऊँचे से ऊँचे पद पर नौकरी करे, व्यवसाय करे, उद्योग व्यापार करे, डॉक्टर, इन्जिनियर, वकील, लेखक, कलाकार, अदाकर बने किन्तु जिसकी जितनी सार्मथ्य होती है, वह उतनी ही राशि शिक्षा पर व्यय कर पाता है, जिसके कारण निर्धन परिवार के बच्चे शिक्षा पाने में पिछड़ जाते है। फिर जिनके पास परिवार चलाने लायक आमदनी होती है याने मध्यम श्रेणी का परिवार भी केवल पेट पालने लायक ही सारा जीवन ऐसे ही बना रहता है, ऐसे में अपनी अभिलाषा के बाद भी बच्चों को उच्च शिक्षित प्रशिक्षित कराने में पिछड़ जाता है।

हाँ जिस परिवार के पास समुचित धन सम्पत्ति है, सक्षम है, वे तो अपनी संन्तानों को इतना शिक्षित प्रशिक्षित करा देते है, कि वे अपने पैरों पर मजबूती से खड़े होकर सुखमय अपने परिवार का पालन पोषण पीढ़ीयों तक कर सकते है। ऐसे परिवार शासन प्रशासन सत्ता का लाभ लेकर दिनोदिन उन्नति के पथ पर आगे बढ़ते रहते है । ऐसे व्यक्ति जो असाहाय निर्धन होते है उनकी सहायता भी नहीं करते है, यदि धनवान व्यक्ति परोपकार के रूप में सहयोग करता है तो यह सर्वोत्तम दानी शिक्षादानी बन सकता है।

किन्तु जिनके पास धन वैभव होता है वे तो अपने धन को आत्म शान्ति के लिए धार्मिक कर्मकाण्ड क्रिया कलापों में व्यय करने हेतु उत्सुक रहते है अपनी शान बताने हेतु अनावश्यक आडम्बर बड़े–बड़े भोज, बड़ी होटलों या मंगल भवनों में विवाह समारोहों, रीति रिवाजों, कुरीतियों आदि में खर्च कर सन्तुष्ट होना चाहते है । जबकि सबसे बड़ा दान ''शिक्षादान'' के लिए कन्जूस बने रहना चाहते है।

ऐसे परिवेश में शिक्षण प्रशिक्षण का दायित्व सरकारों का होता है, सरकार के पास अथाह साधन है, अधिकार है, निर्णयक शक्ति है, कि अपने देश के प्रत्येक नागरिक का रोजगार मूलक निशुल्क शिक्षित प्रशिक्षित करा सकती है, और राष्ट्र का नाम ऊँचा उठा सकता है।

फिर सरकार ऐसे क्यों नहीं करती है, अब समझिये दिल्ली की केजरीवाल सरकार का बजट प्रावधान शिक्षा एवं स्वास्थ्य पर सर्वाधिक है इस कारण दिल्ली में शिक्षा का स्तर सुधर रहा है, शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ रही है, निजि विद्यालय के विद्यार्थियों के पालक उन्हें सरकारी स्कूलों में प्रवेश कराने हेतु उत्सुक हो रहा है, स्वास्थ्य पर भी प्रदेश के नागरिक सरकार की सुविधाओं का लाभ ले रहे है। यह एक ऐसा उदाहरण है कि सभी सरकारे दिल्ली सरकार की शिक्षा एवं स्वास्थ्य नीतियों का अनुसरण कर अपने नागरिकों को समान रूप से शिक्षित करा सकते है। बीमारियों का मुफ्त इलाज करा सकते है। यह हमारे देश में प्रथम उदाहरण है । जिसे केन्द्र एवं राज्य सरकारों को अपनाने से नागरिकों को समान भाव से उन्नति पाने का अवसर दिया जा सकता है।

अब अभिभावक के समक्ष एक ऐसी चुनौति है जिसे स्वीकार कर अपनी सन्तानों को सक्षम बनाने हेतु शिक्षित प्रशिक्षित करने हेतु सर्व प्रथम कुरीतियों, धार्मिक, उत्सवों आदि फिजुल खर्चों में होने वाले व्यय को समाप्त कर अपने या अपने परीचितों के बच्चों को शिक्षित कराने में व्यय करने करने हेतु आगे आये। ताकि देश के संसाधनों पर समान रूप से अपना बर्चस्व बन सके। यदि शिक्षित हो गये तो सक्ष्म होंगे , राजनीति में आगे आकर शासन प्रशासन में कम से कम अपनी जनसंख्या के अनुपात में भागीदार बनेगें।

आइये शिक्षित बनकर चुनौति खड़ी करें।

– रामनारायण चौहान

क्या आप जानना चाहोगे?

हम अपने जीवन में कुछ न कुछ करना चाहते है समाज संवा परोपकार जरूरत मन्दो की सहायता समाज द्वारा किये जा सकते रहे सार्वजनिक उत्थान के कार्यों में योगदान। इनके लिये यदि हमें अपने महापुरूषों की जीवनी एवं कार्यों से कोई उदाहरण लेकर जानना चाहते है तो महात्मा फुले के कार्यों से समझ बना सकते है।

शासकीय व्यवस्था में 'देशमुख' क्षेत्र का अधिपति और पाटिल गाँव का राजा हुआ करता था।, ये पद वंशागत हुआ करते थे भूमि के स्वामी किसान होने पर भी उनकी सिवल आय का अधिकांश हिस्सा लगान के रूप में शासन के राजकोष में चला जाता था। उसका अल्पांश ही जनता के लिए खर्च किया जाता था। उस समय शत्रु के आक्रमण को रोकना और शांती बनाये रखना राजा का कर्तव्य माने जाते थे। ऐसी स्थिति में कृषि–सुधार करने पर कृषि–उत्पादन बढ़ाने की बात कोई कैसे सोच सकता था? मध्ययुग के राजा–महाराजाओं को धन की प्राप्ति, लड़ाई के समय से की गई लूटपाट के आलावा, गरीब किसानों के शोषण से ही मिला करती थी। पेशवा–राज्य में लगान को बोझ इतना भारी था कि बेचारा किसान वर्ष भर चोटी का पसीना एड़ी तक बहाने पर भी ज्यों–त्यों करके जीवन–यापन कर सकता था। सरकारी कोष में जमा धन राजा–रजवाड़ो के आमोद–प्रमोद, सेना के खर्च, अमीर–उमरावों के स्वागत तथा आतिथ्य और शास्त्री–पंडितों को संस्कार आदि जैसे अनुत्पादक कार्यों में खर्च किया जाता था।

किसानों और कृषि–मजदूरों पर भयंकर अत्याचार किये जाते थे। पेशवा का दत्तक भाई अमृतराव और अन्य अधिकारी उनसे पैसे माँगते और उनके न दे पाने पर अमृतराव उनके बच्चों के शरीर पर उबलता तेल उंडेलता। बड़े–बड़े तवे गरम कर उनपर किसानों को खड़ा कर दिया जाता था। उनकी पीठ पर बड़े–बड़े शिलाखंड रखे जाते, उन्हें उल्टा लटकाकर उनकी नाक में मिर्च का धुआँ छोड़ा जाता था। महाजन, जो प्रायः ब्राह्मण हुआ करते थे, किसानों–मजदूरों को ऋण देकर कागजात बनाते और ऋण अदा न करने पर ऋणी के बेटे–बेटियों को बंधुआ मजदूर बनाते। ऋण राशि का ब्याज चुका न पाने के कारण, उसके बदले में, किसानों–मजदूरों की कई पीढ़ियाँ महाजन की सेवा में अपना जीवन बिताती।

चार वर्णों और हजारों जातियों में बँटे हिंदू की कई समाज में ब्राह्मणों का स्थान सर्वोपरि था। ब्राह्मणों को छोड़ अन्य वर्णों के लोगों को शिक्षा का अधिकार ही नहीं था। इसके अलावा, धार्मिक ग्रंथो में धर्म–संबंधी सारे अधिकार ब्राह्मणों को ही दे दिये गये थे। इसलिए सभी प्रकार के धार्मिक मामलों में ब्राह्मण का वचन ही देवता का निर्णय माना जाता थ। तत्कालीन पेशवा–राज्य के सभी ऊँचे पद ब्रह्मणों को ही दिये जाते थे और आगे चलकर अंग्रेजी राज्य में भी सभी वरिष्ठ पद ब्राह्मणों के ही हाथों में रहे। इस प्रकार ब्राह्मणें ने अपने आपको 'सर्वश्रेष्ठ' घोषित किया था और वे अन्य जातियों के लोगों के साथ तुच्छता का बर्ताव किया करते थे। ब्रह्मणों के अधिकार सुरक्षित थे और कोई भी उनमें हस्तक्षेप नहीं कर सकता था। माथे पर आड़ी रेखाओं वाला तिलक लगाने का अधिकार केवल ब्राह्मणों को ही था। एक बार कुछ सुनारों ने आड़ी रेखाओं वाला तिलक लगाया तो उस तिलक की लोहे की मुद्रा बनाई गई और उसे तपाकर उन सुनारों के माथे पर अंकित कराई गई।

ब्राह्मण के हाथों कोई उपराध हो जाने पर उसे बहुत मामूली दंड दिया जाता था। इससे ब्राह्मणों को मानों कोई भी पाप करने की खुली छूट मिल गई थी। कहा जाता था– ''ब्राह्मण भले ही हो भ्रष्ट, फिर भी वह तीनों लोकों में श्रेष्ठ!''

उस समय की न्याय–संस्था भी भ्रष्टाचार से अछूती नहीं थी। सड़ी–गली राजनैतिक और शासकीय स्थिति का यह हाल था, तो सांस्कृतिक और सामाजिक स्थिति' की और भी दुर्गति थी। सांस्कृतिक गुणों का तो कब का सर्वनाश हो चुका था। धार्मिक और सामाजिक वातावरण को घुन लग गई थी और वह नितांत खोखला बन चुका था। महार, मांग, चमार जैसी अतिशुद्र तथा अछूत मानी जाने वाली जातियों के लोग हमेशा अपने गले में छोटे–छोटे घड़े बाँधकर ही विचर सकते थे, क्योंकि उनके सड़क पर थूँकने और उस थूँक पर ब्राह्मण के पाँव पडने पर ब्राह्मण–देवता को छूत लग जाती थी। जिस सड़क से ये अतिशुद्र गुजरते थे, उस सड़क की धूल में उनके पाँवों के निशान बनना स्वाभाविक था। उसी सड़क से ब्राह्मण अपवित्र हो जाते थे इससे अछूत पाप के भागीदार बनते थे। इसलिए अछूतों को अपनी कमर में कँटीले पेड़ों की टहनियाँ बाँधनी पड़ती थीं, ताकि उनसे पाँवों के निशान तुरंत मिट जाएँ, उनको सुबह और शाम को अपनी झुग्गी–झोपड़ियों से बाहर आने की अनुमति नहीं थी क्योंकि उस समय मनुष्य की परछाईं दूर तक फैलती है। यदि किसी समय सामने से ब्राह्मण आ जाता था। इसलिए अछूत व्यक्ति तपती दोपहर में ही बाहर जा सकता था, फिर चाहे उसके घर किसी की वर्षगाँठ हो या बरसी।

कोई बहुत ज्यादा बीमार या मृत्युशय्या पर होता तो उसके लिए इन दयावान देवताओं ने बड़ी कृपा करके एक सुविधा कर दी थी। किसी अछूत को सुबह या शाम बाहर जाना पड़े, तो वह एक हाथ में थाली और दूसरे हाथ में पत्थर लेकर 'ठन्–ठन्' की ध्वनि करते हुए जा सकता था ताकि वह अशुभ ध्वनि सुनकर ब्राह्मण–देवता बाहर न आएँ या बाहर हों तो उस अछूत की परछाईं से बचे।

ऐसे परिवेश में महात्मा जोतीराव फुले ने भेदभाव पूर्व ऊँच नीच अप्रश्यता की स्थापित व्यवस्था में सुधार करने हेतु स्वंय अपनी पत्नि सावित्रीबाई फुले व अन्य सहयोगियों को साथ लेकर सामाजिक एवं शैक्षणिक क्रान्ति करके यु परिर्वन के पथ प्रदर्शक बने ।

रामनारायण चौहान

महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान

ए-103, ताज अपार्टमेन्ट्स, गाजीपुर, दिल्ली -110096

फोन/फैक्स नं. 011-45082626, मो. : 09990952171

E-mail: phuleshikshansansthan@gmail.com Web: www.phuleshikshansansthan.org.

सत्यमेव जयते

आजीवन सदस्यता फॉर्म

मैं महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान का आजीवन सदस्य बनना चाहता हूँ/चाहती हूँ।

मैं अपनी आजीवन सदस्यता राशि रु. 3000/- शिक्षादान की राशि रू. 11000/-स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, रोहिणी कोर्ट ब्रांच, दिल्ली, IFSC कोड नं. SBIN/0010323 के करन्ट एकाउंट नं. 32240494101 में जमा कर काउन्टर स्लिप संलग्न कर रहा/रही हूँ।

मेरी जानकारी निम्नानुसार है :-

1. नाम
2. पिता/पति का नाम
3. जन्म तिथि 4. ब्लड ग्रुप
5. शिक्षा
6. व्यवसाय
7. वोटर कार्ड नं. 8. ड्राईविंग लाइसेंस नं.
9. आयकर पेन कार्ड नं. 10. आधार कार्ड नं.
11. स्थायी पता

पिन कोड

12. पत्र व्यवहार का पता

पिन कोड

13. फोन/फैक्स नं. 14. मोबाईल नं.
15. ई-मेल

Passport Size Photo

दिनांक: प्रभारी के हस्ताक्षर (कोड नं.) आजीवन सदस्य के हस्ताक्षर

कार्यालय उपयोग हेतु

श्री..... ने रसीद नं. ..... दिनांक ..... से रु. 3000/- जमा करा दिए है।

सदस्यता कोड नं.: आजीवन सदस्यता प्रदान की जाती है। अध्यक्ष कोषाध्यक्ष

सामाजिक चिंतन (भाग-28)

सहजभाव से सेवा करो

प्रायः सेवाभाव की भावना सभी में विद्यमान रहती है, और परोपकार करने का कर्तव्य निभाना भी सहजभाव से संभव है, फिर भी समाजसेवी जो भी, जिसने भी समाज सेवा के क्षेत्र में छोटे से छोटे, मध्यम एवं बड़े से बड़ा कार्य भी सहजभाव से करने की तम्मना रखने वाले सरलता से परिपूर्ण कर सुख–चौन से बिना कोई टेंशन के सेवा करने में प्रसन्नता का एहसास करते रहते है, एवं लोगों के भी काम पूरे हो जाते है।

सामाजिक सेवा करने वाले निस्वार्थ भाव रखकर कुछ न कुछ जन सेवा, मानव सेवा, प्राणी मात्र की सेवा करना अपने जीवन का उद्देश्य बनाकर अपने कामों के साथ–साथ परोपकार भी करके आत्म शान्ति का अनुभव करते है

यह आवश्यक नहीं है कि जिनके पास अकूत धन–सम्पत्ति हो वे ही समाज सेवा कर सकते है। यह अनुभव है कि बिना पैसे वालों भी समाज सेवा करके अपना दायित्व पूर्ण कर आत्म संतोष का एहसास करते है जबकि अधिकांश धन–सम्पत्ति शोहरत की चाहत रखने वाले या सक्षम व्यक्ति भी अपने जीवन में समाज सेवा की भावना होते हुए भी कुछ नहीं कर पाते है एवं चिन्तन करते रहते है, कि अब आगे से मैं भी समाज सेवा करूंगा, किन्तु स्वार्थभाव होने से उसके लिये अनुकुल समय ही नहीं आ पाता व चिन्तन करते–करते बूढ़ा हो जाने पर भी समाज सेवा करने का चिन्तन करता रहता है लेकिन स्वार्थ के प्रबल भाव के कारण ऐसे लोगों द्वारा समाज सेवा करने का अवसर ही निकलता रहता है और अंतिम समय में पछतावा बना रहता है, कि मैंने सम्पत्ति, संतान, वैभव तो खूब तो हासिल किया, किन्तु परोपकार का अवसर ही आया और अब कुछ करने की भावना होते हुए परिवार की चिन्ता के कारण कहीं भी किसी प्रकार से समाज सेवा नहीं कर सका और इसी उधेड़ बुन में अन्ततः इस मरूभूमि से अंतिम सांस लेकर बिदा हो जाता

ऐसे व्यक्तियों को जनमानस अच्छी तरह पहचानते हैं एवं उसको हीनभाव से देखते है। ऐसा जीवन किस काम का? जीवन तो दुसरों के लिए कुछ कर गुजरने के लिए उत्तम जीवन होता है

हम समझते है सामाजिक क्रान्ति के जनक महात्मा जोतिराव फुले के परिवार में धन सम्पत्ति की कमी नहीं थी, उनके पिता के पास पूना में जमीन थी, जिसके वे मालिक थे, किन्तु फुले तो परोपकार के लिये ही जन्म लेकर आये थे, किसे मालूम था, कि फुले बड़ा होने पर घर के कार्यों में ही जीवन जियेगा, किन्तु इससे उलट फुले स्वंय तो परोपकारी जीवन के आदर्शा बने, साथ ही उनकी पत्नि सावित्री बाई फुले को शिक्षित किया, प्रशिक्षित किया व देश की पहली शिक्षिका बनाकर उन्होंने अपने कुल का जन्म सुधार दिया। दोनों प्राणि का आदर्श जीवन है इन्होनें अपना सम्पूर्ण जीवन अपने स्वंय के लिये ही नहीं जिया, किन्तु दुसरों की सेवा करके ही जीवन की अमिट छाप छोड़ी। जिसे आज की पीढ़ी एक उदाहरण के रूप में मानकर सहजभाव से सेवा करने की प्रेरणा लेकर सेवा करने में प्रसन्न है।

हम देखते सुनते आ रहे है कि संसार के बड़े से बड़े रहीस की अपार सम्पत्ति में से उसका एक भाग मानव सेवा के लिये दान करने में अग्रणी बन जाते है ऐसे दानी भामाशाहों का सफल जीवन व्यतीत होता है। और मरने के बाद भी उनका नाम चलता रहता है। ऐसे सहजभाव के दानवीरों का इतिहास भरा पड़ा हैं, जो वर्षों पूर्व चले गये, किन्तु उनके काम आज ही नहीं सदा सदा के लिये अमर कर गये है। इनका अनुसरण होते रहने से ही समाज के अनेक सार्वजनिक काम पूरे हो जाते हैं

सहजभाव से सेवा करने वालों का जीवन भी सुखमय रहता है, एवं समाज के लिये उसके द्वारा किये गये योगदान को जन–मानस कभी भूलता नहीं है

यह भी उदाहरण होते है कि सब–कुछ होने के बाद भी कई स्वार्थी जीवन जीने वाले व्यक्ति समाज सेवा के क्षेत्र में भुले–बिसरे ही होते हैं, उन्हें कोई मान–सम्मान नहीं करता । इस कारण सहजभाव से प्राणी मात्र की सेवा करने वालों के कारण ही सार्वजनिक कार्य सम्पन्न हो पाते है

यह चिन्तन भी किया जा सकता है, कि कोई मूर्ति लगाकर मन्दिर बनाकर, समाजसेवि नहीं होता है। असली मानव सेवा, पशुसेवा, वृक्ष लगाने की सेवा, करके ही सेवा का असली हकदार बन सकता हैऐसे सार्वजनिक कार्य जो मानवता से जुड़े है एवं वैज्ञानिक आधारों पर खरे उतरने वाले कार्य ही सहज सेवा–परोपकार करने वालों की पंक्ति में शामिल होकर अपने सफल जीवन का लक्ष्य पूरा कर ले।

रामनारायण चौहान

सम्राट अशोक महान

(304 ईसा पूर्व-232 ईसा पूर्व)

मौर्य वंश के संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य का पौत्र अशोक मौर्य (पिता बिन्दुसार मौर्य) अपने वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली एवं न्यायप्रिय, समतावादी सम्राट था। अशोक नाम बचपन में उनकी माँ सुभद्रांगी ने ही रखा था, जिसका अर्थ है ऐसा सम्राट जिसके राज्य में दुख न हो। अशोक के बड़े भाई का नाम सुसीम था परन्तु अशोक बचपन से ही प्रखर, तेजस्वी, योद्धा गुणों से पूर्ण होने के कारण अपने भाई को पराजित कर स्वयं मगध का शासक बना तब लोगों ने उसे चण्ड अशोक कहा। अशोक का शासन काल 273 ई0पू0 से 232 ई०पू० तक रहा, परन्तु अशोक के जीवन में एक नया मोड़ 260 ई0पू0 में कलिंग युद्ध की खून खराबा को देखकर, इतना दुख हुआ कि प्रायश्चित के फलस्वरूप सम्राट अशोक ''युद्ध से बुद्ध की ओर" मुड़ गये। उनके एक साथ में सत्य था दूसरे हाथ मे सत्ता थी।।

इतिहासकारों ने उन्हें सम्राट अशोक महान इसी कारण लिखा है। पूरे विश्व में अकबर, सिकन्दर के साथ ही महान शब्द जोड़ा गया है। बौद्ध धर्म स्वीकार कर उन्होंने जनता को अपना पुत्रवत स्नेह दिया तथा जीवन पर्यन्त प्रजा धर्म एवं प्रशासन के सन्तुलन का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया।

अश्विन (क्वार मास) की दशमी शुक्ल पक्ष को उन्होंने बौद्ध धर्म स्वीकार करने के कारण इस दिन को धम्म विजय दशमी घोषित किया था परन्तु दसवें अय मौर्य सम्राट (बृहद्रथ मौर्य) की जब उसके ही ब्राम्हण सेनापति पुष्यमिम शुंग ने हत्या कर दी तब अशोक द्वारा स्थापित राज धर्म (बौद्ध धर्म) को नष्ट करके इस पर्व का नाम

"दशहारा'' कर दिया गया क्योंकि बौद्ध धर्म के कारण मौर्य शासन काल में यज्ञ, हवन, कर्मकाण्ड पर प्रतिबन्ध के कारण वैदिक धर्मी बड़े खिन्न थे।

सम्राट अशोक ने अपने पुत्र महेन्द्र को बौद्ध धर्म प्रचार के लिए चीन भेजा तथा पुत्री संघमित्रा को श्रीलंका भेजा। यही नहीं पटना से चलकर राजस्थान के विराट नगर में उन्होंने सघन विपश्यना ध्यान का अभ्यास किया तथा विपश्यना साधना पद्धति को म्यांमार (सुवर्ण भूमि बर्मा), थाईलैण्ड, कम्बोडिया, चीन में भेजा ताकि लोगों में शान्ति स्थापित हो सके। अपने शासन काल में बौद्ध धर्म की तीसरी महासभा का आयोजन करवा कर आलसी, दुराचारी, शील, शिथिल, पाखण्डी भिक्षुओं को बाहर बौद्ध धर्म से निष्कासित कर दिया।

उनका साम्राज्य पश्चिम में अफगानिस्तान से बर्मा सीमा तक तथा कश्मीर से कर्नाटक तक फैला था। उनकी महानता के अवशेष आज भी राष्ट्रीय प्रतीक (National Symbol), राष्ट्रीय पक्षी मोर का होना तथा कल्याणकारी अनुच्छेद का संविधान में समावेश आदि स्पष्ट दृष्टिगोचर होते हैं। सड़क के किनारे वृक्ष, कुआं, सरांय बनाना उनका लोकोपकारी कार्य पर जोर था। माता–पिता की सेवा, शील आचरण के लिए उन्होंने धर्म मंत्री (धम्म अमात्य) की तैनाती की थी ताकि राजनीति में धर्म का प्रवेश हो और राजनीति सेवा के बजाय भोग का साधन न बन जाय। उन्होंने पूरा जीवन ''चरत भिक्खवे बहुजन हिताय बहुजन सुखाय" के लिए अर्पित कर दिया था। सम्राट अशोक महान लोगों का मूल्यांकन गुण दोष के आधार पर करते थे।

शिक्षा – हम सबको अपने पूर्वजों के सुकृत्यों से शिक्षा लेकर बुद्ध (सिद्धार्थ शाक्य) सम्राट अशोक मौर्य, वृहद्रथ मौर्य, सावन्ता माली, महामना फूले आज समाज में श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए क्योंकि यही उनके प्रति सच्ची उत्तराधिकारिता की कसौटी है।

कुशवाहा शाक्य मौर्य सैनी

हम सब एक पेड़ की टहनी।

नोट- अगले अंक (नवम्बर) में महामना फूले परिनिर्वाण मास के उपलक्ष्य में सत्यशोधक समाज तथा सार्वजनिक सत्यधर्म पर प्रकाश डाला जायेगा।

एस0बी0 सैनी (B.E.)
पूर्व मण्डल अभियन्ता
BSNL
महामंत्री पंचशील सोसाइटी कानपुर
मो0: 9415407576

आपसी बात

शिक्षा इशारा अब यह कालम इसलिये बना रहा है कि देश के अनेक भागों से मोबाइल/फोन पर बातचित होती है इसका रिकार्ड भी रखना फर्ज समझ रहा है। तो आइये मो. 09990952171 या फोन नं.01145082626 पर हमारे कार्यालय में जो भी बातचीत होगी उसके अंश प्रकाशित होते रहेंगें।

माह - अगस्त से सितम्बर 2019

● राजस्थान– हरगोपाल भाटी (झालावाड़), सांवरमल सैनी (सीकर), एड.अनुभव चन्देल, पूनमचन्द कच्छावा, बुधसिंह सैनी, (जयपुर), बंशीलाल माली (भीलवाड़ा), भगवती माली (डेगाना), सुरेश कच्छावा (डीडवाना), मंगलचन्द सैनी (लाखेरी) ।

● मध्य प्रदेश – जगदीश सैनी (जबलपुर), डॉ. प्रेमलता सैनी, छाया सैनी, आर.डी. माने, गजानंद भाटी जगदीश सोंलकी, अविनाश फसाटे, मधु अम्बाड़कर, जी.पी. माली, राजेन्द्र अम्बाड़कर, सुनील अचारकाटे, राजेन्द्र कुमार सैनी (भोपाल), लीलाधर धारवे, गजानन्द रामी, शिवनारायण गेहलोत (उज्जैन), राजेश दौड़के (छिन्दवाड़ा),नारायण यादव (हरसोला), सी.एल. वर्मा (नागदा), लोकेश वर्मा (महू), विनोद मकवाना (बड़नगर), चन्दसिंह बागवान (सिहोर), सत्यनारायण चौहान, यादवलाल चौहान, विष्णुप्रसाद बरतुने (इन्दौर),

● महाराष्ट्र– शंकरराव लिंगे (सोलापुर), राजेन्द्र सैनी, एल.के. माली वनिता लोण्डे (मुम्बई), महेश गणगणे (अकोला), किशोर कन्हेरे,प्रा अरूण पंवार, आर.सी.पंवार (नागपूर), ज्ञानेश्वर गौरे (यवतमाल), शिवदास पुणे (पुणे), श्री कृष्ण बनसोड़ (अमरावती)।

● उत्तरप्रदेश– इन्जि. एस.बी. सैनी (कानपूर) श्रीचन्द सैनी, (मेरठ) कप्तानसिंह सैनी महावीर सैनी, डॉ. अशोक सैनी, रमेश सैनी (मथुरा), चन्दनलाल श्रीमाली संजय श्रीमाली (इलाहबाद), अवनीश सैनी (गाजियाबाद), राधेश्याम सैनी (आगरा)

● गुजरात / गंगाराम गेहलोत, (अहमदाबाद), ।

● छत्तीसगढ़– हरीश पटेल(बालोद), सुभाष दौड़के (कोरबा)।

● बिहार– संजय मालाकार (पटना), बी.एन. सैनी (डेयरी–आन–सान), मदनभक्त (कटिहार) ।

● हिमाचल प्रदेश– अनील सैनी (पोन्टा साहेब), पी.डी. सैनी, राजेन्द्र सैनी, सुनील सैनी (कांगडा)।

● हरियाणा– हेमन्त सैनी (रेवाड़ी), राजेन्द्र कुमार सैनी (लाड़वा), रामेश्वर सैनी (रोहतक),

● कर्नाटक – एन.एल. नरेन्द्र बाबू (बैंगलोर),

● दिल्ली– चौ.इन्दराजसिंह सैनी, खुशीराम सैनी, आजादसिंह सैनी, रमेश कुमार सैनी, के.पी. सिंह, सी.ए., जी.एल. सैनी, कृष्णदेव भारल, खुबसिंह सैनी, विनोद सैनी (सी.ए.)

● जम्मू एण्ड कशमिर– श्री कृष्ण सैनी (जम्मू)।

● तमिलनाडू– व्ही. एम. पल्लव मोहम वर्मा (चैन्नई)।

● पंजाब – हरभजनसिंह सैनी (पटियाला)

THE STUFE LEGENDS ARE MADE OF CYNTHIA STEPHEN

By now, their educational initiative had won some support . Necessities like books were supplied through well wishers; a bigger house, owned by a Muslim, was found for a second school which was started in 1851. Moro vithal Walvekar and Deorao thosar assisted the school. MajorCandy, an educationist of pune, sent book. Jotirao worked here without any salary and later Savitribai was put in charge. The School committee to, has nobly volunteered to devote herself to the improvement of female education without remuneration . We hope that as Knwledge advances, the people of this country will be awakened to the advantages of female education and will cordially assist in all such plans calculated to improve the conditions of those girls."

On November 16, 1852, the education department of the government orgainsed a public felicitation of the phule couple, where they were honoured with shawls. In his acted in conformity with the dictates of his conscience and above all, the will of God.

On February 12, 1853, the school was publicly examined. The report of the event states; "The prejudice against teaching girl to read and write began to give way…the good conduct and honesty of the peons in conveying the girl to and from school and parental treatment and indulgent attention of the teachers made the girls love the schools and literally run to them with with alacrity and joy."

That savitribai had a remarkable influence on her student can be gauged from the fact that an eleven year old dalit student of hers, Mukabai , wrote a remarkable essay which was published in the paper Dyanodaya, in the year 1855. In her essay, Muktabai Poigantly describes the wretchedness of the so-called untouchables and lambastes the brahmanical religion and culture for degrading and dehumanizing her people.

As a writer and thinker

The year 1854 was important as Savitribai publishedher collection f poems, called kabya phule (poetry' Blossoms). Her Portry, the first of its kind,is a hiatorical document of the time. She consciously chose the traditional forms like abhang, often called a folk form. Her language in simple and effective. While some of her pomes are basically nature pomeas, In others she engages with thethems of education and cates system, exhorting people to throw

away slavery. No wonder, She is regarded as the pioneer of modem Marathi poetry..

Another Collection of Savitri's, Bavan Kashi Subodh Ratnakar (The Ocean Of Pure Gems) was Publised in in 1891. It is biography, in verse, of phule had developed a devastating Critique of the Brahman interpretation of Marathi history in the ancient and medieval periods. He Portrayed the pessshwa rulers, later overthrown by the British, as decadent and oppressive, and Savitribai reterates those themes in her biography.

In addition to these two books, Savitribai edited for publication, four of jotiba's speeches on Indian History. A few of her own speeches were published in 1892. Savitribai'S correspondence is also remarkable because they give us an insight into her life and into women's experiences of the time.

Savitribai Said, "Work Hard, Study well, and do good. She constantly underscored the importance of education and physical work for knowledge and properity. She felt that women must receive an education as they were in no way inferior to men; they were not the slaves of men.

In her essay Karz (Debt), She Condemned the idea of celebrating festival by borrowing money and thus being burdened by heavy debts. She realized that the poor find themselves helpess and unable to change the realities of their lives, either accepted blind faith or got trapped in different ways. She also wrote on addiction, explaining how it ruined the lives of the addicted and their familes- themes that are still relevant in the 21st century.

As wife

Savitribai internalized the viosion philosophy of Phule, and was anrdent supporter of his work. When phule was publically humiliated for participating- because he was a 'polluting' Shudra- in the marriage procession of a Brahman friend, he rused home and shared the pain and shame he felt with his father, who however, accepted the mainstream practice of caste discrimination and tried to console him saying it was ordained in the scriptures. But Surely Savitri understood his fight against the social slavery. She showed by her action and by the effort she made to study, work and cooperate with him in allhis activities, that she was truly his soul-mate. They inspired each other to make things better.

The Phule couple shared a very close and loving bond. They had mutual love, respect, loyalty, and commitment to their common life-work. But they had no child of their own. Phule came under pressure to marry again so that he may have offspring, but his response show the rare commitment and respect he bore for his life-partner , as well as ideal marriage relationship: "If a Pair has no child, if would be unkind to charge awoman with barrenness. It might be the husband who was unproductive. In that case if the woman went in for a second husband how would her husband takeit? Would he not feel insulted and humiliated? It is acruel practice for a man to marry a second time because he no issue from his wife." He lived

Cont. Next Month

राजनैतिक चिन्तन

चुनावों में उम्मीद्वारी लो

जब से देश आजाद हुआ, और लोकसभा,राज्यसभा, विधान सभा, विधान परिषद, मंत्री मण्डल की सदस्यता नगर निगम, नगरपालिका, नगर पंचायत, मण्डी समिति, सहकारी समिति आदि में सैनी माली कुशवाहा, शाक्य, मौर्य,तिगल, समाज व इनकी लगभग एक सौ से अधिक शाखाऐं उपशाखाओं के राजनेताओं को जब चुनाव होता है तब प्रायः राजनैतिक पार्टियां जनसंख्या के अनुपात में पार्टी का उम्मीद्वार प्रायः नहीं बनाती है । जबकि सम्पूर्ण देश का लगभग 12 प्रतिशत् हमारा समाज यही अपेक्षा करता है कि मेरे समाज के राजनेता को टिकिट मिलना चाहिए ?

अब यह चिन्तन करने का गम्भीर विषय है, कि हमारी इतनी बड़ी आबादी होने के बाद भी हमारे राजनेता को टिकिट नहीं मिलनी है, जबकि 3.4 प्रतिशत् की आबादी वालों को 70.80 प्रतिशत् टिकिट मिलने का कारण क्या हो सकता है?

समाज के सक्रिय कार्यकर्ता जब चुनाव सामने आता है तो अपने समाज के राजनेता की उम्मीद्वारी के लिये चहल–पहल करने लगते है पार्टियों को निवेदन आवेदन करते है, राजधानियों में दौड़ भाग कर पार्टियों के नेताओं से मिलने का प्रयास करते है, कई बार पार्टि का प्रधान मिलने का समय ही नहीं देता, फिर नीचे के पदाधिकारी से मिलजुल कर समाचार पत्रों में टिकिट मिले, इसके समाचार छपवाते है। छोटे–मोटे, जलसे–जुलुस निकाल कर आत्म शान्ति करने का प्रयास करते है। यह सब करने के बाद भी टिकिट तो और कोई ले जाता है, और हमारे सक्रिय समाज के राजनैता अपनी–अपनी पार्टियों से आस्था रखने के कारण इन्हीं 3.4 प्रतिशत् की आबादी वालों के उम्मीद्वारों को तन–मन–धन लगाकर विजयी बनाने में जुट जाते है, चमाचागिरी करने, दरी, टेन्ट कुर्सीयाँ, बेनर, झण्डे, बिछाने उठाने रैलियों में अपने लोगों को गाड़ियों में भरकर उनकी रैलियां सफल कराने में अपने आप को पार्टी का वफादार समझने लगते है, और अपने लोगों को प्रभावित कर मतदान भी उनके पक्ष में कराने में सुख की अनुभूति करते है। इस प्रकार तो हम जनतंत्र में भी गुलाम बने हुए 70 वर्ष हो गये व हम जहाँ के तहाँ है । यही विडम्बना है।

अभी तक हुए लोकसभा–विधानसभा के चुनावों में हमें एक प्रतिशत् भी हिस्सेदारी नहीं मिली है। आज हमारे जनप्रतिनिधि लोकसभा में हरियाणा से एक बिहार से एक उत्तर प्रदेश से–दो महाराष्ट्र से एक एवं राज्यसभा से कोई नहीं, विधान सभा/परिषद से बिहार के –21, महाराष्ट्र से 16, उत्तरप्रदेश से 15, मध्यप्रदेश से 5, राजस्थान से– 3 हरियाणा से 2, पंजाब से एक बाकी प्रदेशो से शून्य जनप्रतिनिधि है याने एक प्रतिशत् भी नहीं है।

अब क्या करें ? जरा सोचिये बिहार के राजनेता किसी पार्टी से बन्धे हुए नहीं है, ''जिसका पलड़ा भारी वहीं पर लेगें भागीदारी'' की राजनीति करते है इससे जनप्रतिनिधित्व मिल जाता है, पार्टियों में सक्रिय रहते है, और जो चुनाव जीत जाते है, मंत्री बन जाते है, वे आर्थिक रूप से भी प्रायः सक्षम हो जाते है।

कई बार हमारे विजयी राजनेता राजनैतिक पार्टियां भी बनाकर गुस्सा निकालते है, किन्तु प्रायः असफल ही रहते है। कई राजनेता पार्टियाँ भी बदल लेते है, किन्तु उम्मीद्वारी की कोई सम्भावना नहीं रहती है । यह भी विडम्बना है।

● चलो जो वक्त निकल गया वह अब आता नहीं है, इसलिए सबसे पहले समाज का एक फण्ड बनाओं ।

● समाज का विधान सभा, लोकसभा, प्रदेश स्तर एवं राष्ट्रीय स्तर पर एक–एक मुखिया स्वीकार करो उसका निर्देश पाकर मतदान करना सीखो ।

● राजनैतिक पार्टियों में पदाधिकारी बनना सीखों ।

● प्रादेशिक एवं राष्ट्रीय स्तर पर विशाल रैली करना प्रारम्भ करो ।

● अपने–अपने क्षेत्र के मतदाताओं के शासकीय स्तर व स्वास्थ्य शिक्षा स्तर की सेवा करना प्रारम्भ करों ।

● ऐसे कार्य करो जो मीडीया में पहचान बढ़ाये ।

● यदि उम्मीद्वारी समाज के राजनेता को मिल जाय तो उसके विरूद्ध उम्मीद्वार मत बनो ।

● यदि टिकिट नहीं मिले तो अपने समाज के राष्ट्रीय मुखिया के निर्देश पर नोटा में वोट करना सीखों ।

● सदा सक्रिय रूप से राजनीति करना प्रारम्भ करों ।

● अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत करना प्रारम्भ करों ।

● नशा करने, बुरी आदतें, कुरीतियों में व्यय करना बन्द करों।

यह चिन्तन है कि केवल चुनाव आने पर सक्रिय रहकर राजनीति करने वालों को समाज की एकजूटता एवं आर्थिक शक्ति को समझकर पार्टियाँ स्वंय उम्मीद्वार बनाने हेतु पहल करेगी।

हमें भीख नहीं अपनी जनसंख्या के अनुपात में प्रतिनिधित्व चाहिए। यह चिन्तन करें ।

(रामनारायण चौहान)

देश भर के समाचार

● अजमेर(राज.)– 22 सितम्बर को छटवाँ प्रतिभावा मेघावी विद्यार्थि सम्मान समारोह विजयसिंह भाटी एम.डी. अजमेर विद्युत वितरण कम्पनी के मुख्य अतिथ्य एवं त्रिलोकचन्द इन्दौरा एम. डी. त्रिलोक ट्रान्सपोर्ट कारपोरेशन की अध्यक्षता तथा समाज के विशिष्ट अतिथियों द्वारा सम्मान किया।

● बानासुर (राज.)– 1 सितम्बर को दशम प्रतिभा सम्मान समारोह में तहसील के प्रतिभावन समाज के विद्यार्थियों का अतिथियों ने सम्मान किया ।

● तिजोरा (राज.)– 6 अक्टूबर को सैनी माध्यमिक विद्यालय माता सावित्रीबाई फुले चौक में द्वितीय प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित।

● शाजापुर (म.प्र.)– माली अशोक वर्मा की बहन की गौरनी रिवाज नहीं करते हुऐ समाज के छात्रावास एवं धर्मशालाओं में अनुदान देकर अनुसरणीय कार्य किया।

● दिल्ली– ऑल इंडिया सैनी सेवा समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष दिलबाग सिंह सैनी ने राजकुमार सैनी (गुड़गांव) को महामंत्री एवं राजेश सैनी (दिल्ली) को कोषाध्यक्ष नियुक्त किया। बधाई

● उज्जैन(म.प्र.)– बाबूलाल साँखला सेन्ट्रल जेल उज्जैन की सराहनीय सेवाओं के लिए भोपाल में राज्यपाल द्वारा सम्मानित किया।

● सांरगपुर (म.प्र.)– संतोष पुष्पद एवं विनोद पुष्पद ने महात्मा जोतीराव फुले की नगर के मुख्य चौराहा पर प्रतिमा लगाने हेतु नगर पालिका अध्यक्ष को ज्ञापन दिया।

● औंकारेश्वर(म.प्र.)– समाज की धर्मशाला हेतु ट्रस्ट ने तीन प्लाट क्रय किये है। उक्तजानकारी प्रेमनारायण भाटी अध्यक्ष मारवाड़ी माली समाज धर्माथ एवं परमार्थिक ट्रस्ट ने दी।

● नागौर(राज.)– राम अवतार सोनू पंवार का अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन इसरों अभियंता एस–सी (सिविल) में चयन हुआ । बधाई

● सुमेरपुर(राज.)– प्रथम इन्टरनेशनल गेम्स में खुशवन्त परिहार का फुटबाल प्रतियोगिता नेपाल के लिए चयन । बधाई।

● पीपाड़ सिटी(राज.)– माधुसिंह कच्छावा पत्रकार को पत्रकारिता के क्षेत्र में उत्कुष्ट कार्य के लिए पालिका अध्यक्ष महेन्द्र सिंह कच्छावा, डी.एम, आदि ने सम्मानित किया।

● डुंगरपुर(राज.)– डी.एम. चेतन देवड़ा जिले के नागरिकों के लिए सहज सरल रूप से कार्य करने हेतु लोकप्रिय है।

● दिल्ली – जाट रेजिमेन्ट चीफ समाज गौरव एस.के. सैनी को बधाई ।

● नीम का थाना (राज.)–रघुनाथ प्रसाद सैनी ने बताया कि 7 सितम्बर को रायल पैलैस में रक्तदान मेला आयोजित किया ।

● आणन्द(गुजरात)–पल्लवी बेन रामी का नगरपालिका द्वारा बेस्ट आचार्य का सम्मान 5 सितम्बर को दिया। बधाई।

● पुणे(महा.)– फातिमा शेख शिक्षिका की 6ध09ध19 को जंयति मनाई । ये सावित्रीबाई फुले के साथ स्कूल में पढ़ाती थी ।

● हिसार (हरि.)– शिक्षा के क्षेत्र में समर्पित सेंट कबीर विद्यालय को आदि नेटर पूनम सैनी को सिल्वर जोन संस्था दिल्ली द्वारा आयोजित समारोह में जे एन. यू. कुलपति डॉ. जगदीश कुमार द्वारा सम्मानित किया। बधाई ।

● जोधपुर(राज.)– माली संस्थान द्वारा अ. भा. महात्मा ज्योतिबा फुले प्रशिक्षण केन्द्र के तत्वधान में रामबाग परिसर में आधुनिक लायब्रेरी बनाई जाएगी । उक्त जानकारी अध्यक्ष पुखराज साँखला ने दी ।

● जयपुर(राज.)– समाज के विद्यार्थियों को बैंक एस.एस.सी. रेल्वे की प्रतियोगिता परीक्षा हेतु निशुल्क कोचिंग सुविधा महात्मा फुले शिक्षण समिति 74 गोपी टॉवर गूजर की थड़ी में सम्पर्क–9468866995 (प्रकाश)

● बुलढाणा (महा.)– 3 नवम्बर को श्री सांरगधर बालाजी नगरी में अखिल भारतीय माली महासंघ द्वारा समाज का सत्यशोधक सामूहिक विवाह समारोह 3 नवम्बर को आयोजित किया जाएगा । रमेश हीरालकर 9860921578 ।

● सिंगरोली (मप्र.)– 23 सितम्बर को कुशवाहा महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष राकेश महतो पूर्व मंत्री बाबूसिंह कुशवाहा विधान सभा उपाध्यक्ष सुश्री हीना लिखिराम कावरे के मुख्य अतिथ्य में प्रतिभावनों का सम्मान समारोह ।

● गाजीपुर (उप्र.)– महात्मा ज्योतिबा फुले पब्लिक स्कूली जगदीश पुरम में 9 नवम्बर को सामाजिक शैक्षणिक आर्थिक एवं राजनैतिक विकास पर सम्मेलन ।

● चिड़ावा (राज.)– नेहा पुत्री ओम प्रकाश सैनी और जय भारती पुत्री शीशराम का राष्ट्रीय अंतर महाविद्यालयी हॉकी प्रतियोगिता ग्वालियर के लिये चयन होने पर बधाई ।

● साकोली भण्डारा (महा.)– संदेश स्मारिका के तत्वधान में 15 सितम्बर को प्रतिभावन विद्यार्थियों का सम्मान एवं नागरिक अभिनंदन समारोह ।

● नागपूर(महा.)– 17 नवम्बर को नवम्बर अ.भा. माली महासंघ द्वारा 6वाँ वर–वधु परिचय मेलावा ।

● कानपूर (उप्र.)– कुशवाहा संदेश स्मारिका के तत्वाधान में 15 सितम्बर को प्रतिभावन विद्यार्थियों का सम्मान एवं नागरिक अभिनंदन समारोह।

● परभणी (महा.)– शहर में महात्मा जोतीराव फुले की प्रतिमा 10 सितम्बर को पूर्व मंत्री सुरेशराव वरपुड़कर ने लोकार्पित की मुंजाजी गौरे संस्थान सावता सेना ने आभार प्रकट किया ।

● बिजनौर (उप्र.)– ज्योतिबा फुले सैनी वेलफेयर सोसाइटी के अध्यक्ष कल्याणसिंह महामंत्री देवेन्द्र सैनी, संरक्षक राजपाल सैनी ने बताया कि सैनी प्रतिभा सम्मान विधायक विक्रमसिंह सैनी एवं अर्न्तराष्ट्रीय सैनी समाज मार्गदर्शन एवं एकता संघ के चेयरमन पी.के. सैनी आदि अतिथयों ने सम्मानित किया।

● पंजाब– प्रसिद्ध सूफी गायक सतिन्दर पालसिंह सैनी ने हरभजन सिंह सैनी के उपस्थित में बाढ़ पीड़ीतों की सहायता की ।

● राज का ताजपुर (उप्र)– सुरेश सैनी द्वारा समाज की मिटिंग आयोजित की जिसमें शिक्षा एवं केरियर के प्रति लोगों को जागरूक करेगें।

● रायपुर (छग.)– युवा माली समाज के संरक्षक मुन्नालाल सैनी संगठन मंत्री जंयत कंटकार ने बताया कि नवम्बर में अखिल भारतीय स्तर का परिचय सम्मेलन आयोजित किया जाएगा ।

● धार (मप्र.)– ईशा माली एवं नेहा माली ने नेशनल कुश्ती प्रतियोगिता हरियाणा में क्रमशः स्वर्ण एवं रजत पदक जीता । बधाई।

● खरखोदा (हरि.)– अर्णव सैनी आत्मज रामसिंह सैनी कम्पयूटर संचालक का पुत्र आठवीं का छात्र है जिसे चन्द्रयान के चांदपर पंहुचने का गवाह प्रधान मंत्री के साथ बनने का अवसर के लिए । शुभकामना ।

● पटना (बिहार)– मुख्य अतिथि राकेश महतो एवं अजय मेहतो की अध्यक्षता में युवा कुशवाहा महासभा की मिटिंग में शिक्षा एवं समाज एकता पर विचार किया।

● जयपुर(राज.)– 23 फरवरी 2020 को माली (सैनी) समाज जयपुर द्वारा 27 वाँ सामूहिक विवाह सम्मेलन होगा। उक्त जानकारी शान्ति कुमार सैनी ग्यारसीलाल सैनी (एड.) श्री कृष्ण सैनी ओम राजोरिया जुगल किशोर सैनी ने दी ।

● जयपुर(राज.)– सावित्रीबाई फुले गर्ल्स होस्टल में 67 छात्राऐं आई.ए.एस., आर.ए.एस. बैंक, एल.डी.सी., एस.एस.सी., नेट सी.ए., सीडीएस व लाइब्ररियन आदि का कोचिंग प्राप्त कर रही है। होस्टल का संचालन भारतीय शिक्षण सेवा संस्थान द्वारा किया जा रहा है।

● हरिद्वार(उख.)– पी.सी.एस. (जे) की परीक्षा में उत्तीर्ण समाज के सिविल जज प्रशांत मौर्य 2. देवांशु सैनी 3. अंशुनैना मौर्य 4. सत्येन्द्र कुमार 5. पुनीत मोहनदार 6. पंकज कुमार कुशवाहा 7.प्रियन्का मौर्य 8. दीपा सैनी 9.अमित कुमार मौर्य उक्त जानकारी डॉ. प्रदीप सैनी ने दी ।

● खरसोद कलॉ बड़नगर(मप्र.)– समाज के 52 प्रतिभावन विद्यार्थियों का सातवाँ सम्मान समारोह हुआ ।

● पुणे (महा.)– सावित्रीबाई फुले आडिटोरियम में 24 सितम्बर को सत्यशोधक समाज की स्थापना का 146 वाँ स्थापना दिवस समारोह का आयोजन, उक्त जानकारी अरविन्द माली ने दी ।

● दिल्ली– गीता कुमारी इतिहास से एम. फिल करने वाली छात्रा ने जे.एन.यू. छात्रसंघ दिल्ली की पहली महिला अध्यक्ष चुनी गई। पूर्व भी में भी कामरेड चन्द्रशेखर सैनी भी अध्यक्ष चुने गये थे। बहुत–बहुत बधाई। उक्त जानकारी धमेन्द्र राकसिया चुरू ने दी ।

● हैदराबाद (तेलांगना)– महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान की कार्यकारिणी सदस्य सुकुमार पेटकुले बेस्ट टीचर से सम्मानित हुए। बधाई। आपने आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा का प्रचार–प्रसार करने के लिये उत्तम कार्य किया। सरकार के मंत्री ईटला राजेन्द्र ने पुरस्कार दिया ।

● भरतपुर (राज.)– 29 जनवरी 20 को महात्मा जोतीराव फुले सैनी छात्रावास में सामूहिक विवाह समारोह । सम्पर्क–9785561455

● जयपुर (राज.)– 26 सितम्बर को भगवान मार्ग स्वेज फार्म सर्किल का नामकरण ''सिविल राइटस सोसाइटी'' के प्रयासों से नगर निगम द्वारा ''सावित्रीबाई फुले सर्किल'' घोषित किया। उक्त जानकारी मनफूल सिंह सैनी अध्यक्ष ने दी। बधाई ।

● बीकानेर (राज.)– आदर्श तंवर ने राष्ट्र मडण्ल भरोत्तलन प्रतियोगिता ने तीन स्वर्ण पदक जीते । कनाड़ा के सेंट जांस न्यू फाउण्डलैंड में 15 से 21 सितम्बर 2019को 8 वीं राष्ट्र मडण्ल प्रतियोगिता हुई थी । इसमें 14 देशों ने भाग लिया था । आदर्श तंवर को विश्व चैंपियन बनने पर बधाई।

● बैर (राज.)– समाज की प्रतिभाओं का सम्मान एवं सामूहिक विवाह समारोह 15 सितम्बर को हुआ । शैरसिंह सैनी अध्यक्षने आभार प्रकट किया ।

● पोन्टा साहेब (हिप्र.) डॉ. राजकुमार सैनी को राष्ट्रीय सैनी पंचायत का प्रधान बनाया । बधाई।

● औरंगाबाद मथुरा(उप्र.) महात्मा ज्योतिराव फुले विकास समिति द्वारा 8नवम्बर को ग्यारहवाँ सामूहिक विवाह समारोह । सम्पर्क– रामदयाल सैनी 74549633807 रमेश सैनी 8923511243

● जोधपुर (राज.)। माली संस्थान द्वारा 8 अक्टूबर को छात्रवृत्ति वितरण एवं प्रतिभा सम्मान समारोह के मुख्य अतिथि श्री अशोक गहलोत मुख्यमंत्री होंगे। सम्मानित राजेनद्र गहलोत, पूर्व मंत्री राजेन्द्र सिंह सोलंकि, नेता प्रतिपक्ष जोधपुर नगर निगम सुनील परिहार, पूर्व अध्यक्ष राजसीको। उक्त जानकारी प्रेम सिंह परिवार अध्यक्ष ने दी।

संकलन

रामलाल कच्छावा
कोषाध्यक्ष

महाराजा सैनी जन्मोत्सव मनाया

मथुरा। 13 सितम्बर को प्रतिवर्ष की भाँति महाराज सैनी जंयति एवं सैनी पब्लिक स्कूल में समाज सेवियों का सम्मान समारोह, महाराजा सैनी जन्म स्थल चामुण्डा कालोनी मथुरा में पी.डी. सैनी अध्यक्ष सैनी सभा हिमाचल की अध्यक्षता एवं महापौर डॉ. मुकेश आर्य बन्धु, उप महापौर मूलचन्द गर्ग, सावित्रीबाई ज्योतिराव फुले ट्रस्ट के पूर्व अध्यक्ष चौ. इन्दराज सिंह सैनी मुख्य अतिथि तथा रामनारायण चौहान महासचिव महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान दिल्ली, लीलाधर धारवे पूर्व अध्यक्ष श्री गुजराती रामी माली समाज उज्जैन शिवदास महाजन रतन माली पुणे, आजादसिंह सैनी दिल्ली डॉ. प्रेमलता सैनी द्वारा सम्मानित किया गया । महाराजा सैनी एवं स्थायी स्तंभ पर अतिथियों ने माल्यापर्ण किया।

मुख्य अतिथि आर्य बन्धु ने कहा कि महाराजा सैनी जन्म स्थल तक आने के लिए नगर निगम द्वारा रोड़ बनवाया जाएगा, उन्होनें शिक्षा को प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक बताया।

चौ. इन्दराजसिंह सैनी ने इस विद्यालय निमार्ण के लिए किये सहयोग का स्मरण

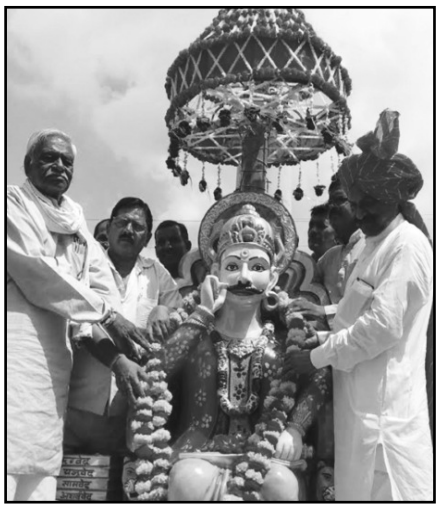

कराते हुए देश भर के समाज बन्धुओं को जन्मस्थल पर आने का आव्हान किया, साथ ही महाराजा सैनी जन्म स्थल को विकसित करने हेतु कप्तानसिंह सैनी का अभिनंदन किया ।

आयोजन कप्तानसिंह सैनी प्रधानाचार्य ने जन्म स्थल निमार्ण एवं समाज का इतिहास बताया एवं अतिथियों का स्वागत किया ।

महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान द्वारा प्रकाशित ''शिक्षा इशारा'' अंक का अतिथियों ने विमोचन किया ।स्कूल के विद्यार्थियों ने रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

सर्वश्री मंगलचन्द सैनी, डॉ. महावीर सैनी, डॉ. अशोक सैनी, मेघश्याम सैनी (पार्षद) आदि ने सफल आयोजन के लिए आभार प्रकट किया ।